

प्रतापगढ़ जनपद में कृषि का स्तर एवं फसल प्रतिरूप

vuj e i idkश/शक/क Nk=½]

Hkixksy foHkx

y[kuÅ foशof | ky;] y[kuÅ

I kj kश %&

इस शोध = ds ek/; e l s eš ; g i j h {k.k djuk pkgrk gw fd D; k v/; ; u क्षेत्र में कृषि का स्तर एवं फसल प्रतिरूप से कृषि के क्षेत्र में v; ki d i f j o r U g s j g k g s fd ugha। इस शोध = में कृषि का स्तर तथा फसल प्रतिरूप Hkh ppkZ dh xbl gÅ irki x<+ tuin ea dgy Hkx&kfyd {k=Qy 345481 हेक्टेयर भागों पर कृषि की tkrh gÅ okLro ea bu nksuka iz; kstuka ds fy, mi yC/k Hkx&{k=} bl nkj ku c<k gÅ v/; ; Uk {k= ea Ql y ifr: lk ij l dkj kRed i Hkko jgk gÅ ; | fi fhkUu&fhkUu i dkj के फसल प्रतिरूप प्रयोग किये जाते हैं। फिर समस्या के कुछ संवेदनशील क्षेत्र %tš & Nkvh tkr fuEu l k{kjrk Lrj] vkfFkd {kerk c<kuk vkfn½ ij /; ku dšUnr djuk आवश्यक है। यहाँ की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आधारित है। वर्तमान में कृषि rduhdh कीटनाशक nokvka o jkl k; uka ds l kFk उन्नतशीप बीजों की आपूर्ति का प्रभाव यहाँ की कृषि पर परिलक्षित है।

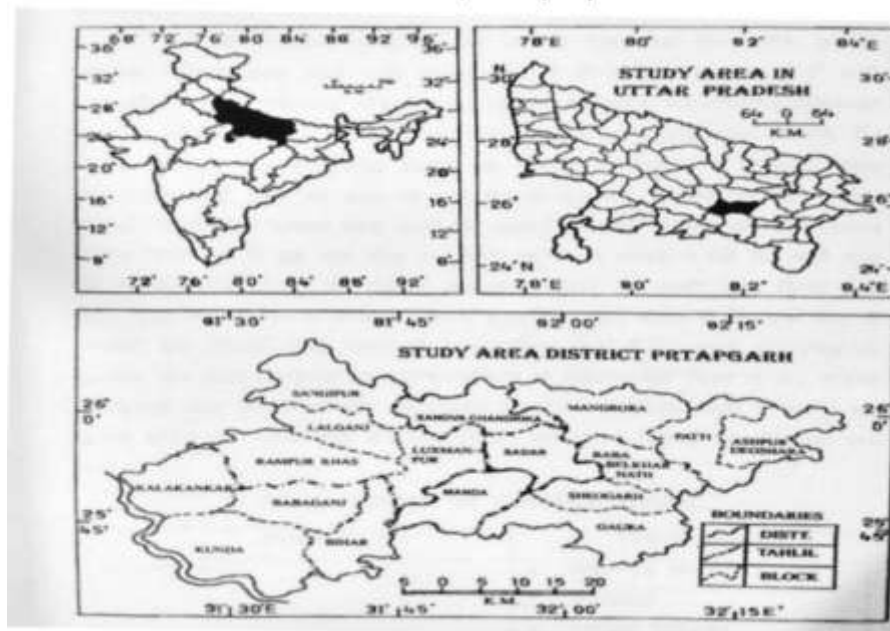
dh oMz %&सिंचाई, उसर, कीटनाशक दवाईयाँ, फसल प्रतिरूप

कृषि {k= Hkjr h; vFkD; oLFk dh jh<+ है। यह देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आज भी देश की आधी आबादी जीवनयापन के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि क्षेत्र देश की समस्त आवश्यकताओं जैसे— Hkstu] oL=] vkokl , oa कच्चा माल बड़े पैमाने पर प्राप्त करता है। इसके बावजूद हमारे देश के किसानों की vkfFkd fLFkr cgr Bhd ugha gÅ v/; ; u {k= ea [kk | kUu mRi knu ds l kFk&l kFk frygu vkj Ql yka dk mRi knu Hkh gkrk gÅ bl ds ckot in Hkh v/; ; u {k= ea uxnh Qसलों के पैदावार पर विशेष बल दिया जा रहा है। यहाँ Ål j Hkfe ea , d Ql yh {k= dk foLrkj vf/kd ns[kus dks feyrk gÅ

v/; ; u {ks= %&

प्रतापगढ़ जनपद वर्तमान में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद मण्डल के अन्तर्गत 25°34' N 81°19' E अक्षांश तथा 81°19' E 82°34' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 3717 वर्ग कि०मी० है। जनपद की उत्तरी सीमा सुल्तानपुर पूर्वी सीमा जौनपुर जनपद, पश्चिम सीमा जौनपुर जनपद की पश्चिमी सीमा है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से इस जनपद को 5 ब्लॉकों में विभाजित किया गया है। जिनमें से एक ब्लॉक का क्षेत्रफल 1710 वर्ग कि०मी० है।

प्रतापगढ़ जनपद (उत्तर)



v/; ; u dk mnनः; %&

➤ तुइन रिकी खेती कृषि का स्तर का अध्ययन करना।

➤ तुइन रिकी खेती की प्रविधि का अध्ययन करना।

भोध प्रविधि प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।

शोधकार्य से सम्बन्धित द्वितीयक आँकड़ों का संकलन जिला सांख्यिकीय पत्रिका के

संकलन में प्रकाशित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि का स्तर मुख्य फसलों के अन्तर्गत

जनपद-प्रतापगढ़, वर्ष 2015-2016

प्रति 100 हेक्टेयर में

कृषि फसल	उत्पादन (मेट्रिक टन)	कुल भूमि पर प्रतिशत
खेती	168495	48.77
पकौड़ी	125108	36.21
दालिया	24434	7.67
दालिया फसल	2131	0.62
कैलास	9527	2.76
कैलास	3218	0.93
कुल	12568	3.64
	345481	100.00

खेती यह रबी की फसल है जिसका सर्वाधिक उत्पादन होता है कृषि में

उत्पादन का 48.77% है।

; gkj xgij dk mRi knu Hkife 168495 gDVs j gS tks dy कृषि क्षेत्र के अंतर्गत 48-77 प्रतिशत है। अध्ययन {ks= ea l okf/kd xgij dk mRi knu xksj k rFkk dkykdkdj fodkl [k.M ea gpyka

pkoy %&

जनपद प्रतापगढ़ में गेहूँ के बाद चावल खाद्यान्न फसल है। सम्पूर्ण कृषि क्षेत्र के लगभग 41 प्रतिशत क्षेत्रफल पर इसकी खेती की जाती है। यह वर्षा vk/kkfjr Ql y gA tuin ea l okf/kd mRi knu fcgkj fodkl [k.M ea 13454 gDVs j Hkife पर है। जनपद में चावल की कृषि रोपण विधि एवं छिटक कर की जाती है। जनपद ds l kaxhi g] jkei g l xkex<} eku/kkrk , oa i Vvh {ks=ka ea pkoy dh [krh vf/kd gkrh gA bl {ks= ea tuin ds dy mRi adn का लगभग 45 प्रतिशत उत्पन्न होता gA pkoy dsfy, fpduh feVvh l okf/kd mi ; Dr gA

Tokj&cktjk %&

Tokj , oa cktjk tuin dh eq; [kk | Ql ys gA tuin ds Apa {ks=ka , oa अल्प वर्षा वाले क्षेत्रों में rFkk fl pkbZ dh vl fo/kk okys {ks=ka ea [kk | klu mRi kfnr fd; s tkrsgA tuin ea Tokj dh कुल उत्पादन भूमि 3218 हेक्टेयर है जो कृषि का 0-93 प्रतिशत है। सर्वाधिक उत्पादन सांगीपुर, प्रतापगढ़ सदर एवं l .Mokj pflnzdk fodkl [k.Mks ea gkrk gA cktjk dk l okf/kd mRi knu eku/kkrk fodkl [k.Mk ea 1460 gDVs j Hkife ij gA

nygu %&

tuin ea foHkUu i d kj dh nyguh Ql yka t\$ &mn] ep] vjgj] el j
vkfn dh tkrh gA v/; ; u {k= ea nygu dk dyy mRi knu Hkfe 24434 gDVs j gS
जो कृषि क्षेत्र का 7-07 प्रतिशत भूमि पर है। ये फसलें वर्षा पर आधारित होती हैं।
I Ei w k l nyguh Ql ya gYdh cypz , oa fpduh nkeVfeVh ea i shk dh tkrh gA
frygu %&

v/; ; u {k= ea frygu dk dyy mRi knu Hkfe 2131 gDVs j gS tks dyy
कृषि क्षेत्र पर 0-62 प्रतिशत पर है। सर्वाधिक तिलहन का उत्पादन क्षेत्र सण्डवा
pflun d k fodkl [k.Mk ea 247 gDVs j Hkfe ij gA
xlluk %&

गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है। यह एक रसदार फसल है। गन्ने की कृषि
ds fy, puuk; Dr nkeV feVh I okf/kd mi ; Dr gA bl Ql y ds fy, 150 l eh0
से अधिक वर्षा आवश्यक होती है। जनपद में इसका उत्पादन विशेष रूप से शिवगढ़]
i VVh o xkj k fodkl [k.M ea gkrk gA tuin ea xllus dk mRi knu rsth l s c<+
jgk gA
vkyw %&

tuin ea bl dh [krh yxHkx I Hkh fodkl [k.Mka ea fd; k tkrk gA bl dh
बुआई अक्टूबर से नवम्बर माह में की जाती है। इसकी खेती व्यापारिक दृष्टि से की
tkrh gA tuin ea xkj k] ekU/kkrk] I kxhi g o बिहार विकासखण्डों में इसकी कृषि
i edf k : lk l s gkrh gA
vU; Ql ya %&

वर्ष; 01 या 02 वृत्तों में मरिक्नु हकसकस्यद हकसे {ks= 12568 gDVs j

भूमि है जो कुल कृषि क्षेत्र का 3-64 प्रतिशत है।

tuin ea 01 y ifr: lk %&

फसल प्रतिरूप का अर्थ एक समय विशेष पर विभिन्न फसलों के अधीन
 vkuj kfrd {ks= l s gA fdl h Hkh {ks= dk 01 y ifr: lk , frgkfl d fodkl dh , d
 yEch ifØ; k dk ifj .kke gA 01 y ifr: lk ds cgr vk; ke gA bl s [kr ea mxkbz
 xbl 01 yka dh l a; k ds vuq kj ns[kk tk l drk gS [kj hQ 01 y ifr: lk] jch
 01 y ifr: ij rfk tk; n 01 y ifr: l ea foHkkftr fd; k tkrk gA

किसी विशेष क्षेत्र में विशेष फसल का चुनाव भौतिक और अभौतिक जैसे दो
 cMs dkj dks dk ifj .kke gkrk gA

dkjd

Hkkfird dkjd
 इसके अन्तर्गत जलवायु वर्षा मिट्टी
 rki eku bR; kfn 01 y ifr: lk dks
 i Hkkfor djrs gA

xS Hkkfird dkjd
 bl ds vlr xr fl pkb] cht] mojd]
 [kr dk vkdkj] l jdkj dh uhfr; k;
 तथा अन्तर्राष्ट्रीय कारक उल्लेखनीय हैं।

l kj . kh

irki x<+ tuin ea 01 y ifr: lk

वर्ष	xg	pkoy	tkS	Tokj	nky	puk	frygu	xlluk	01 y l ft; k;
1990-91	34.95	30.92	4.25	8.95	9.6	4.1	0.38	0.98	1.9
1995-96	37.95	32.80	2.85	8.23	6.24	3.94	0.46	0.94	1.96
2000-01	37.92	32.30	3.10	8.65	3.91	3.65	0.60	0.85	2.30
2005-06	37.32	36.11	5.12	9.92	4.61	2.96	1.12	1.01	3.1
2010-11	32.9	37.35	6.1	8.3	4.21	2.63	1.84	1.13	4.4

निष्कर्ष :-

इस शोध पत्र के बिन्दुवत विश्लेषण के उपरान्त जनपद प्रतापगढ़ में कृषि का स्तर एवं फसल प्रतिरूप का अध्ययन करने के पश्चात् शोधकर्ता के सामने निम्नलिखित निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

- जनपद में कृषि जोतों का आकार कम हुआ है तथा कृषि के स्तर में वृद्धि हुई है।
- अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान कृषि में वैज्ञानिक एवं जैविक कृषि को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- कृषि में नवीन तकनीकों का अनुप्रयोग साथ ही सिंचन विधि को विशेष ध्यान देना होगा।

शोधकर्ता को अपने व्यापक सर्वेक्षण में यह ज्ञात हुआ है कि जनपद के प्रत्येक विकासखण्डों में कृषि का स्तर एवं फसल प्रतिरूप में सुधार हुआ है। फलतः अध्ययन क्षेत्र में कृषि में जागरूकता आयी है।

संदर्भ सूची :-

1. बंसल, आर०पी० (2002)– कृषि तकनीकी का प्रबंधन, उजाला प्रकाशन नरेन्द्र, दिल्ली।

2. feJk t0ih0 Hkkjr dk Hkkksy] fl pkbZ 2008] i0l 0 171&192
3. fl g] dhfr&ckxokuh] iz kx i0rd Hkou] bykgkckn] i0l 0 98
4. शुक्ला, डॉ० जी०एस० वानिकी का आर्थिक विकास से संबन्ध, एसोसिएशन
vkQWft; kxkfQdy fjl pl i0l 0 290
5. jk; , oa p0kjh&Hkkjr dh feVV; kj uई दिल्ली, कृषि अनुसंधान परिषद्,
i0l 0 268
6. सिंह बी०पी० (2006) वैज्ञानिक खेती लखनऊ, ग्राम विकास प्रकाशन, उ०प्र०,
i0l 0 70
7. frokj] vkj0l h0 % Hkkjr dk Hkkksy] fl pkbZ
8. सिंह, ब्रजभूषण : कृषि भूगोल, 2002, पृ०सं० 135
9. ftyk l kf[; dh; if=dk] dk; kzy; ftyk vFkz , oa l a[; kf/kdkjh 2017&18
10. dq {ks=&xkeh.k fl pkbZ 0; oLFkk xkeh.k fodkl ea=ky;] ubZ fnYyhA